एच आई वी/एड्स पर राष्ट्रीय छात्र और युवा संसद के विशेष अधिवेशन में प्रधानमंत्री का सम्बोधन

7 नवम्बर, 2004
नई दिल्ली

"सबसे पहले, मैं देश के विभिन्न भागों से आए युवा नेताओं को बधाई देना चाहता हूँ जो हमारे समय की सबसे बड़ी जन-स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक एचआईवी और एड्स पर विचार-विमर्श करने के लिए यहां एकत्र हुए हैं। आज यहां उपस्थित होकर आप लोगों ने सशक्त होकर यह जता दिया है कि आप सभी, वर्तमान और भविष्य में इस खतरे से संघर्ष करने के लिए तैयार हैं। आपका यहां एक साथ आना इस बात की पुष्टि करता है कि भारत की लोकतांत्रिक संस्थाएं गंभीर चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर उपाय करती हैं। मैं आशा करता हूं कि यहां उपस्थित युवक-युवतियां एचआईवी के प्रसार को रोकने और एचआईवी/एड्स से पीड़ित लोगों की स्थिति सुधारने में मेहनत और लगन से काम करेंगे।

मैं एचआईवी/एड्स पर संसदीय मंच के संयोजक और सदस्यों को भी बधाई देता हूँ जिन्होंने एचआईवी/एड्स पर राष्ट्रीय छात्र और युवा संसद के विशेष अधिवेशन का आयोजन करने के लिए पहल की। यह संसदीय मंच इस बात का प्रतीक है कि सभी सांसद एचआईवी/एड्स के खतरों के प्रति कितने चिंतित और गंभीर हैं और दलगत भावना से ऊपर उठकर उनके विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार हैं। यह मंच न केवल अपने संगठन की दृष्टि से अनूठा है बल्कि यह राष्ट्रीय प्रयास के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने और राजनीतिक प्रतिबद्धता दर्शाने की दृष्टि से भी अनूठा है।

भारत में 1986 में जहां एच.आई.वी. का एक ही मामला सामने आया था, वहीं अब एच.आई.वी. प्रभावित लोगों की यह संख्या 50 लाख का आंकड़ा पार कर गई है। एचआईवी/एड्स अब मात्र एक जन-स्वास्थ्य का मुद्दा ही नहीं है बल्कि यह सामाजिक-आर्थिक और विकास से जुड़ा सबसे गंभीर चिंता का विषय भी है। अगर इस पर काबू नहीं पाया गया तो उन्नति और विकास के क्षेत्र की हमारी महत्वाकांक्षाओं को यह बुरी तरह चोट पहुंचाएगा। यद्यपि एच.आई.वी./एड्स से कोई भी प्रभावित हो सकता है, किन्तु गरीब, अलग-थलग पड़ी आबादी, महिलाएं और युवा लोग इससे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इससे लड़ने के लिए हमारे पास दृढ़ता तत्परता और गंभीरता से कार्य करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

हमारी सरकार राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण प्रयासों को और सुदृढ़ करने के लिए कटिबद्ध है। यह हमारी सरकार के न्यूनतम साझा कार्यक्रम का एक हिस्सा भी है। विभिन्न मंत्रालयों ने एचआईवी/एड्स के बारे में जागरूकता पैदा करने और इससे जुड़ी सेवाओं में सुधार लाने के लिए एक राष्ट्रीय कार्य-योजना के लिए मिलजुल कर काम करने का फैसला किया है। फिर भी, इन प्रयासों के लिए अधिक से अधिक साझेदारों और समाज के सभी वर्गों के अधिक से अधिक सक्रिय भागीदारों की जरूरत होगी ताकि इसे सही मायनों में एक व्यापक जन-आंदोलन का रूप दिया जा सके।

इस संदर्भ में, युवा लोगों से हमें सर्वाधिक आशाएं हैं। जिन देशों में, एच.आई.वी. का फैलाव कम हो रहा है, वहां ऐसा मुख्यतः इसलिए हो रहा है क्योंकि वहां युवा लोग एचआईवी के संक्रमण से स्वयं को बचाने की कला सीख रहे हैं। इसलिए राष्ट्रीय छात्र और युवा संसद का यह विशेष सत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके द्वारा एचआईवी/एड्स से लड़ने का कार्य हमारे युवा लोगों के हाथों में जाएगा।

प्रत्येक दिन, विश्व भर में लगभग 6,000 युवा लोग एचआईवी से केवल इसलिए संक्रमित हो जाते हैं क्योंकि उन्हें अपने आपको बचाने के लिए सूचना, ज्ञान तथा आवश्यक निपुणता का अभाव होता है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन द्वारा लगाए गए एक अनुमान के अनुसार, हमारे देश में सूचित 35 प्रतिशत एड्स रोगी 15-24 आयु वर्ग के हैं।

अध्ययनों से पता चलता है कि बड़ी संख्या में युवा लोगों को इस बात की सीमित जानकारी होती है कि कैसे एचआईवी/एड्स फैलता है और कैसे उन्हें अपने आप को एचआईवी के संक्रमण से बचाना चाहिए। यद्यपि जहां युवा महिलाएं जैविक रूप से ज्यादा संवेदनशील होती हैं, वहीं उनके पास एचआईवी से जुड़ी जानकारी प्राप्त करने के अवसर भी कम होते हैं। यहां तक कि आज भी उनके पास अपने यौन जीवन को नियंत्रित करने का कम ही अधिकार है। कम उम्र में विवाह से युवा लोगों, खासकर महिलाओं को विशेष खतरा होता है।

एचआईवी संक्रमण के विरुद्ध निवारक टीके के अभाव में 'शिक्षा एवं जागरुकता' का सामाजिक टीका ही रोकथाम का एकमात्र प्रभावकारी तरीका है। हमें एचआईवी/एड्स से संबद्ध तीन 'स' अर्थात साइलेंस (चुप्पी), स्टिग्मा (कलंक) तथा शेम (शर्म) का अन्त करना होगा। यह तभी हो सकता है जब हम युवाओं को सूचना, ज्ञान तथा सेवाएं उपलब्ध कराएं जिनकी उन्हें सर्वाधिक आवश्यकता होती है। युवा लोग अपने आपको तभी सुरक्षित रख सकते हैं जब उन्हें एचआईवी/एड्स के बारे में उचित तथा ठीक-ठीक जानकारी मिल सकेगी। उदाहरण के लिए, विश्व भर में हर रोज लगभग 6000 युवा लोग एचआईवी से केवल इसलिए संक्रमित हो जाते हैं क्योंकि उनके पास अपने आपको बचाने के लिए सूचना, ज्ञान तथा कुशलता का अभाव होता है। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन द्वारा लगाए गए एक अनुमान के अनुसार, देश में सूचित 35 प्रतिशत एड्स के रोगी 15-24 आयुवर्ग के हैं।

इसलिए, युवाओं को उनकी यौन सक्रियता से पहले ही इस विषय में जागरूक करना होगा ताकि वे भविष्य के लिए एक जिम्मेदार जीवनशैली की बुनियाद रख सकें। माता-पिताओं, शिक्षकों, परामर्शदाताओं, सामाजिक कार्य- कर्ताओं तथा धार्मिक नेताओं जैसे वयस्क लोगों को युवा पीढ़ी के साथ मिलकर काम करना होगा ताकि युवा लोगों को जानकारी और कौशल हासिल करने में और उनका रवैया बदलने में मदद मिल सके।

एचआईवी पीड़ित लोगों को समाज का सहयोग और सुरक्षा चाहिए। वे समाज के लिए खतरा नहीं हैं। उन्हें सम्मान के साथ अपना जीवन जीने और अपनी अर्जन शक्ति खोये बिना अपना व्यवसाय करने का अधिकार है। यदि हम एचआईवी/एड्स के साथ जुड़े कलंक को धोने और उसके बारे में तमाम गलत धारणाओं को खत्म करने में सफल हो जाएं तो हम इस देश में इसके बढ़ते संक्रमण को रोक सकते हैं।

मुझे पूरी आशा है कि इस महत्वपूर्ण संसद में उपस्थित आप में से हर एक शख्स हजारों अन्य लोगों के लिए उम्मीद की किरण बनेगा और उनका आदर्श होगा। आपकी चर्चाओं का स्वरूप आपको एक अन्य संसद, जो यहां से बहुत दूर नहीं है, जहाँ मैं और मेरे साथी सांसदगण सारे साल विधायी कार्यकलापों में व्यस्त रहते हैं, की कार्यप्रणाली समझने का अवसर प्रदान करती है। हालांकि, आपकी संसद में एचआईवी/एड्स संबंधी नीतियों को लेकर पक्ष और विपक्ष में संभवतः कोई मतभेद न हो, लेकिन मुझे उम्मीद है कि इससे इस चुनौती का सामना करने के लिए काम करने का जो रोमांच है वह कम नहीं होगा। मुझे यह देखकर खुशी हुई है कि संसदीय मंच ने इस प्रक्रिया को राज्य और जनपद स्तरों तक ले जाने की योजनाएं तैयार की हैं।

हमें यह भी खुशी है कि एचआईवी/एड्स के विरूद्ध लड़ाई में हम अकेले नहीं हैं। हमें कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों और द्विपक्षीय वित्त पोषण करने वाली एजेंसियों का सक्रिय सहयोग हासिल है। उदाहरणार्थ, बैंकाक में हुए पिछले एड्स शिखर सम्मेलन, जिसमें कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया था, को काफी महत्व दिया गया था। मैं इस उद्देश्य हेतु सोनिया जी की प्रतिबद्धता के लिए उनका अत्यंत आभारी हूँ।

मैं अपनी बात समाप्त करने से पूर्व एचआईवी/एड्स पर इस विशेष सत्र में मेरे सामने बैठे हर युवक व युवती को तीन संदेश देना चाहूँगा।

- पहला, दूसरों के लिए उदाहरण बनें और आगे रहकर नेतृत्व करें। दूसरों का व्यवहार बदलने से पहले अपना व्यवहार बदलें।
- दूसरा, अपने मित्रों को जानकारी दें और उन्हें सशक्त बनाएं ताकि वे सुरक्षित चयन और सही व्यवहार कर सकें।
- तीसरा, इस देश में एचआईवी पीड़ित हर भारतीय को प्यार, स्नेह, और सामाजिक सहयोग देकर उसका सम्मान और गौरव बनाए रखने का वादा करें।

मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस हॉल में मुझे जो युवा किंतु दृढ़ संकल्पपूर्ण चेहरे देखाई दे रहे हैं वे भारत में एचआईवी/एड्स महामारी की भावी दिशा ही बदल देंगे।

हम कामयाब होंगे और अवश्य कामयाब होंगे।
इस विशेष सत्र की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

*****